Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 6323559

Roll No. 23261028043
Total Mark 43/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A050301T - HISTORY OF MODERN INDIA 1757 AD-185

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	2/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	2/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	2/5						
2	9/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	10/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 8/01/25 Shift: IInd Room No.: 24
Paper Code: A050301T Subject: History Year/Sem: 2nd/3rd
Name of Candidate: Devansh Pandey
Roll No. 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

Signature of Candidate: Devansh Pandey
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 5 0 3 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: BA
Session 2024-25 Year/Semester 2nd/3rd
Subject Name History of modern India
Medium English ○ Hindi ●

Paper Code
A 0 5 0 3 0 1 T

Exam Date
0 8 0 1 2 0 2 5

Name of Candidate
DEVANSH PANDEY

Father's Name
SATYAPRAKASH

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 4

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
6323559

A 0 5 0 3 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code
A 0 5 0 3 0 1 T

Devansh Pandey
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. खाका में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बालपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ▭ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाइल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनो तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त पन्ना नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ▭ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

A 0 5 0 3 0 1 T

खण्ड - अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (a)

पानीपत का तीसरा युद्ध -

पानीपत आधुनिक काल ही नहीं बल्कि मध्यकाल मे भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है यहाँ पानीपत के प्रथम युद्ध से लेकर तृतीय युद्ध तक युद्ध हुए । यह युद्ध 1761 ई॰ मे पानीपत मे अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच हुआ । जिसमें मराठे एक प्रबल तथा मजबूत शासक होते हुए भी युद्ध हार गए थे इसमें 1759 मे अहमदशाह अब्दाली अफगान से भारत आने के लिए प्रयास करता है। इधर मराठे दक्षिण भारत से उत्तर की ओर बढ़ रहे थे। मराठों में प्रमुख शासक सदाशिवराव भाऊ था जिसके नेतृत्व मे यह आगे बढ़ रहे थे उन शासकों ने उत्तर भारत मे कई अन्य शासकों को मिलाने का प्रयास किया लेकिन अपनी नीतियों के कारण विफल रह गए और उन्हें हार का सामना करना पड़ा वहीं अहमद शाह अब्दाली अवध के नवाब को और उत्तर भारत में अफगान पठान को मिलाने में कामयाब रहा । इस युद्ध मे अफगान शासकों की विजय हुई और मराठों में सदाशिवराव भाऊ हत्या के हवाले हो गया। इसमें गार्दी के नेतृत्व में तोपों का कार्य सौंपा गया था । फिर इस युद्ध के बाद मराठे ब्रिटिश के साथ युद्ध में उलझ गए ।

Do Not Write anything in this Portion

अतः पानीपत में लड़ा गया यह युद्ध अंग्रेजों को एक मौका दे गया जो स्वयं का विस्तार कर सके और प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध भी इसी का परिणाम था।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(b)

लार्ड क्लाइव :- लार्ड क्लाइव एक दूरदर्शी शासक था जिसने द्वैध शासन व्यवस्था के साथ-साथ भू राजस्व व्यवस्था संबंधी और न्याय संबंधी कार्य भी किए। इसने भारत में दो कार्यकाल पूरे किए। पहला कार्यकाल (1757-60) और दूसरा (1765-67) तक रहा।

कार्य -

द्वैध शासन - लार्ड क्लाइव ने बंगाल की दीवानी प्राप्त करने के पश्चात बंगाल में द्वैध शासन व्यवस्था लागू कर दी। इस व्यवस्था में दीवानी अधिकार तो कम्पनी के पास थे परंतु निजामत कार्य बंगाल के नवाब के हाथों में ही रहे। इससे बंगाल में आपदा आयी। अकाल को प्रोत्साहन मिला, कृषि व्यवस्था गड़बड़ हुई। हालांकि उप नवाब का पद क्लाइव ने स्थापित किया था।

भू-राजस्व :- लार्ड क्लाइव ने भू-राजस्व व्यवस्था में राजस्व की दरों को बढ़ा दिया और इसके

कारण बंगाल में रैयतों को हानि हुयी।

② बंगाल में जमींदारों द्वारा जमा की जा रही राशी को उन्हीं पर छोड़ दिया गया और उसके ऊपर ब्रिटिश अधिकारियों को निरीक्षण के लिए रखा गया।

③ अकाल में सहायता उपलब्ध कराने के लिए लार्ड क्लाइव ने लार्ड क्लाइव निधी की भी स्थापना करी थी।

④ सैनिक जो पिछले युद्धों में शामिल थे उनके वेतन में कटौती को प्रोत्साहन दिया गया।

इस प्रकार लार्ड क्लाइव ने औपनिवेशिक हितों की पूर्ति की।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(c)

रैयतवाड़ी व्यवस्था -

रैयतवाड़ी व्यवस्था मुख्यतः दक्षिण भारत में लागू की गई थी। इसका सर्वप्रथम प्रयोग कर्नल रीड द्वारा 1792 में किया गया था परंतु बाद में इसको टॉमस मो ने मद्रास के गवर्नर के पद पर होकर लागू किया। इस व्यवस्था में रैयतों के हाथों में उनकी जमीन सौंप दी गई और भू राजस्व सीधे सरकार को जाने लगा। इसमें जमींदारों को हटा दिया गया था।

Do Not Write anything in this Portion

भू राजस्व व्यवस्था में रैयतवाड़ी व्यवस्था की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

① रैयतवाड़ी व्यवस्था में रैयतों को उनकी जमीन दे दी गई और भूस्वामियों को या जमींदारों के हाथ से ले ली गई।

② इसमें भूमि को विक्रय योग्य बना दिया गया।

③ इसके अंतर्गत रैयतवाड़ी में भू राजस्व की दर बहुत ऊंची थी।

④ स्थायी बंदोबस्त की तरह कोई निश्चित राशी नहीं देनी होती थी।

⑤ यह तीन चरणों में आरंभ हुयी।

Ⓐ पहला चरण - ग्रामों में एक स्थान पर राशी वसूल की गई।

Ⓑ दूसरा चरण - डेविड रिकार्डो के लगान सिद्धांत को अपनाकर भूमि के उपजाऊपन के आधार पर राजस्व संग्रह।

Ⓒ तीसरा चरण - राजस्व की राशी बढ़ाई।

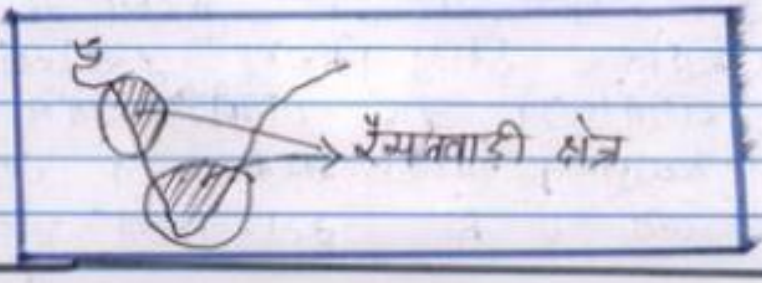

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 T

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (d)

इलाहाबाद की संधि - (1765 ई०)

इलाहाबाद की संधि बक्सर के युद्ध के पश्चात शाह आलम द्वितीय, ब्रिटिश के मध्य हुई इस संधि के दो चरण थे। या यह दो संधियो में हुई थी।

इलाहाबाद की पहली संधि – इलाहाबाद की पहली संधि अगस्त में हुई थी इस संधि में शाह आलम द्वितीय को कड़ी और इलाहाबाद [illegible] अवध से लेकर दे दिया गया था बदले में ब्रिटिश को 50 लाख रूपये प्राप्त हुए थे। यह संधि प्रथम संधि थी

इलाहाबाद की द्वितीय संधि : इलाहाबाद की द्वितीय संधि में मुख्यत: दीवानी अधिकार का हस्तांतरण हुआ था। इसमें ब्रिटिश अधिकारियो को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गयी थी। जिसके चलते ब्रिटिश अधिकारियों ने वहां की शासन व्यवस्था भी प्रारंभ की थी।

प्रभाव – इलाहाबाद की संधि से दीवानी अधिकार प्राप्त हुए और द्वैध शासन व्यवस्था प्रारंभ होने से अकाल पड़े। कृषि को वृद्धि नही मिली। ब्रिटिशो ने लूट मार प्रारंभ कर दी।

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 7

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(c)

सहायक संधि -

सहायक संधि का ... करना डलहौजी के औपनिवेशिक ... को दर्शाता है मुख्यतः जब इसने यह संधि लागू की तब इस समय भारत में वाणिज्यिक पूँजीवाद का अंतिम चरण चल रहा था और औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन में प्रारंभ हो चुकी थी जिससे अधिक से अधिक क्षेत्र में विस्तार किया जा सके।

विशेषताएँ -

सहायक संधि की विशेषताएं निम्नलिखित है।

① संबंधित राज्य (जहाँ यह संधि लागू होगी) वहाँ पर एक ब्रिटिश रेजीडेंट की स्थापना होगी। जो उनके ... कार्यों में सहायता करेगा।

② संबंधित राज्य ... ब्रिटिश रेजीमेण्ट को स्थापित किया जाएगा।

③ संबंधित राज्य में सारे विदेशी कार्य ब्रिटिश द्वारा संपन्न होंगे।

④ संबंधित राज्य की सेना को समाप्त कर वहाँ पर ब्रिटिश की सेना को स्थापित किया जाएगा।

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 T

(5) सहायक संधि में कोई अन्य यूरोपीय अधिकारी यहाँ क्षेत्र में नहीं रखा जाएगा।

इस प्रकार सहायक संधि ने भारत के बहुत बड़े क्षेत्र पर कब्जा किया। जिसमें निम्न राज्य शामिल हैं-

हैदराबाद (1798)
मैसूर (1799)
अवध (1801)
पेशवा (1802)
सिंधिया (1803) → सुर्जीअर्जनगाँव संधि
भोसले (1803) → देवगाँव संधि

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (f)

वॉरेन हेस्टिंग्स :- वॉरेन हेस्टिंग्स का भारत में आगमन ही साम्राज्य विस्तार के लिए हुआ था। इसने भारत में (1772-85) तक शासन किया। जिसमें इसने भू राजस्व व्यवस्था और न्याय व्यवस्था में सुधार किया और विधि का संहिताकरण भी किया।

भू राजस्व व्यवस्था में सुधार :-

भू राजस्व व्यवस्था में वॉरेन हेस्टिंग्स ने विभिन्न पद्धतियाँ लागू की। जिसमें इसके द्वारा प्रारंभ की गई पद्धतियों ने भारत का शोषण किया। प्रथम पद्धति (प्रमुख) लागू की गई जो

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 T

निम्नवत है -

फार्मिंग पद्धति - फार्मिंग पद्धति में वारेन हेस्टिंग ने यह प्रावधान किया कि जो जमींदारी सबसे अधिक राजस्व ब्रिटिश को संग्रहीत करके देगा उसे जमींदारी उस क्षेत्र की प्रदान की जाएगी।

चुंगी एवं शुल्क - पहले सभी स्थानों से चुंगी व शुल्क वसूला जाता था परंतु अब 5 स्थानों को निर्धारित किया गया

- बिहार
- पटना
- ढाका
- मुर्शिदाबाद
- कोलकाता

पंचशाला और एकशाला पद्धति :- वारेन हेस्टिंग्स ने क्रमशः 1772 और 1776 में पंचशाला और एकशाला योजना लागू की। पंचशाला में ब्रिटिशों ने जमींदारों को शामिल नहीं किया परंतु एकशाला में किया।

न्याय में सुधार :- वॉरेन हेस्टिंग्स ने न्याय व्यवस्था में सुधार लाया। इसने दो प्रकार की अदालतों की स्थापना की। जिसमें उसकी प्राच्यवादी धारणा भी प्रदर्शित होती है।

दीवानी न्याय → सदर दीवानी अदालत
↑
जिला अदालत
इसमें हिंदू के लिए हिंदू कानून और मुस्लिम के लिए मुस्लिम कानून थे

फौजदारी न्याय → सदर निजामत अदालत
↑
जिला अदालत

विधि का संहिताकरण - ① कोलब्रुक्स डाइजेस्ट
② कोड ऑफ जेन्टू लॉज़

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(g)

लार्ड विलियम बेंटिक -

लार्ड विलियम बेंटिक ने भारत में सामाजिक सुधारों को प्रोत्साहन दिया था वरन् साथ ही साथ प्रशासनिक सुधारों में भी परिवर्तन किया।
लार्ड विलियम बेंटिक ने भारत में सती प्रथा को समाप्त किया था और महिलाओं के लिए सशक्तीकरण के कार्य किए -

प्रशासनिक सुधार - लार्ड विलियम बेंटिक ने प्रशासन में जो सुधार किए वे आवश्यक रूप से ब्रिटिश हित में थे परन्तु अनजाने ही उन्होंने भारत में भी

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 1

विकास में सहयोग दिया -

① 1833 के चार्टर एक्ट में :- 1833 के चार्टर एक्ट में भारत के गवर्नर जनरल के लिए पद का सृजन किया गया था। इसने बंगाल के गवर्नर जनरल को हटा दिया।

② ठगों का दमन :- ठग लोग प्रमुख रूप से राहगीरों को अंजाम देते थे। जिससे कानून व्यवस्था बिगड़ रही थी जिससे विलियम बेंटिक ने कर्नल स्लीमैन को नियुक्त किया और ठगों का दमन किया।

③ खुली सिविल सेवा की ~~प्रस~~ प्रतियोगिता :- 1833 के चार्टर एक्ट में सिविल सेवा के लिए खुली प्रतियोगिता का प्रावधान था। परंतु, यह लागू नहीं हो पाया।

④ सती प्रथा :- विलियम बेंटिक ने सती प्रथा का अंत 1829 में राजाराममोहनराय की सहायता से किया।

⑤ मैकाले संहिता :- इसीके काल में 1833 के चार्टर के अनुसार विधि सदस्य मैकाले ने मैकाले संहिता का निर्माण किया जिसके कानून 1859 में लागू हुए जो निम्न प्रकार हैं -

~~1858~~
~~1859~~

1859 → ICC (Indian civil Code)
1860 → IPC (Indian Penal Code
1861 → Highcourt Act
1862 → CrPC (Criminal Procedure Code)

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(h)

एनी बेसेंट :-

समाज सुधार के क्षेत्र में बहुत से समाज सुधारकों ने योगदान दिया इस श्रेणी में एनी बेसेंट का भी योगदान अमूल्य है। इन्होंने भारत के पुनरूत्थानवाद के साथ साथ पाश्चात्यवादी सकारात्मक विचारधाराओं को अपनाकर उसका वैकल्पिक रूप प्रस्तुत किया। जिसने समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एनी बेसेंट ने केवल समाज सुधारक बल्कि इन्होंने संस्थाओं को भी चलाने में सहयोग योगदान दिया। इन्होंने नारी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया साथ में नारी सशक्तिकरण की ओर भी अग्रसर हुई। साथ ही साथ हरिजनों के उत्थान के कार्य में भी सहयोग दिया।

थियोसोफिकल सोसायटी में योगदान -

एनी बेसेंट ने थियोसोफिकल सोसायटी को 1882 में शामिल हुई। इन्होंने समाज सुधार

के क्षेत्र में इस सोसायटी को आगे बढ़ाने में विशेष योगदान दिया है। मुख्य रूप से। थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना कर्नल आल्कॉट और ब्लावट्स्की की सहायता से 1875 में हुयी थी।

इस प्रकार न केवल नारी शिक्षा बल्कि पाश्चात्यवादी विचारधार और पुनरुद्धार या पुनर्जागरण में भी इन्होंने अहम भूमिका निभाई।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(i)

मराठों की पराजय के कारण:-

मराठे अपने शासनकाल के दौरान एक मजबूत व प्रबल शासक रहा करते थे परंतु जब ब्रिटिश शासकों को भारत में राजनीति में हस्तक्षेप करने का मौका मिला तब मराठे अपनी शक्ति खोने लगे और अंततः ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल हुए। इनके हार के निम्न कारण हैं-

① भौगोलिक कारक:- मराठे अपनी गोरिल्ला युद्ध प्रणाली के लिए जाने जाते थे परंतु जब पानीपत के युद्ध में इन्हें उत्तर भारत में युद्ध लड़ना पड़ा तब वे मात खा गये और पराजित हुए।

② सरदेशमुखी जैसे कर :- मराठे अपने शासनकाल में बहुत ज्यादा कर लगाया करते थे जिसमें से सरदेशमुखी कर प्रमुख था जिससे लोगों ने भी उनका साथ नहीं दिया।

③ आपसी फूट :- मराठों को मुख्यतः पाँच भागों में बाँट गया था। जिसमें वे अपने परिसंघ में आपसी फूट से ही निजात नहीं पाते थे।

④ ब्रिटिश हस्तक्षेप :- ब्रिटिश के आगमन ने वास्तव में मराठा परिसंघ को समाप्त कर दिया और तीन युद्धों द्वारा उन्हें पूरी तरह खतम कर दिया -

① प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82)
② द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05)
③ तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-18)

⑤ आधुनिक हथियार :- मराठों के पास आधुनिक हथियारों की कमी थी जबकि ब्रिटिश आधुनिक हथियारों से लैस थे।

इन उपर्युक्त कारणों ने मराठों को पूरी तरह समाप्त कर दिया। इनकी पराजय ने यह प्रतीकात्मक अर्थ दिखा दिया कि अब ब्रिटिश पूरे भारत में अपने साम्राज्य को फैलाने के लिए स्वतंत्र हैं -

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 T

खण्ड - ब
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 2

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई० में हुआ जबकि फ्रांसीसी कम्पनी का आगमन 1667 ई० में हुआ दोनों कम्पनियों के पास प्रबल शक्तियाँ थी और दोनों की अपना साम्राज्य विस्तार करने के पक्ष में थी। ये कम्पनियां अपने विस्तार से राजनीतिक पक्ष की ओर मुड़ी और भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करने लगी। इन्होंने किलेबंदी प्रारंभ की। जहाँ एक ओर ब्रिटिश अधिकारियों ने बंगाल में फोर्ट विलियम में किलेबंदी प्रारंभ कर दी वहीं दूसरी ओर फ्रांसीसी शासकों ने बंगाल में चन्द्रनगर में किलेबंदी प्रारंभ कर दी। चूँकि इस समय तक पुर्तगाली कम्पनी गोवा में सिमट कर रह गई थी और दूसरी तरफ डच कम्पनी पूर्वी ओर(मलक्का की तरफ) सिमट कर रह गई अतः भारत में इन दोनों कम्पनियों के मध्य संघर्ष अनिवार्य होगया और इनकी संघर्ष का कारण, इनकी कमजोरियां, इनकी महात्वाकांक्षा एवं इनके द्वारा राजनीतिक और साम्राज्यिक विस्तार को बताया गया है। इसका विस्तृत अध्ययन निम्नालिखित है-

Paper Code
A0 S0 3 0 1 T

15

ब्रिटिश - फ्रांसीसी संघर्ष-

कारण -

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी और फ्रांसीसी कम्पनी के मध्य संघर्ष के कारण निम्नलिखित हैं -

① ब्रिटिश कम्पनी के और फ्रांसीसी कम्पनी के भारत में युद्धों को यूरोपीय मुद्दे का विस्तार बताया जाता है। जैसे प्रथम कर्नाटक युद्ध आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी युद्ध का परिणाम था।

② इन दोनों कम्पनियों ने भारत में उत्तराधिकार के मामले में भी हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया था जैसे द्वितीय युद्ध में ब्रिटिश ने कर्नाटक में अनवरूद्दीन का और फ्रांसीसी ने मुजफ्फर जंग का सहयोग किया।

③ इन युद्धों के पीछे स्वाभाविक रूप से यूरोपीय हित था क्योंकि सप्तवर्षीय युद्ध का परिणाम यहाँ दिखाई देता था।

④ ये दोनों कम्पनियाँ दक्षिणी भारत में राज्यों के आपसी संघर्ष का फायदा भी उठा रही थीं।

⑤ दक्षिण भारत मुख्यतः कपास उत्पादक क्षेत्र था जिससे कम्पनियों को आर्थिक लाभ भी था।

Do Not Write anything in this Portion

संघर्ष
- प्रथम कर्नाटक युद्ध
- द्वितीय कर्नाटक युद्ध
- तृतीय कर्नाटक युद्ध

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1744-48)

भारत में फ्रांसीसी कंपनियों के मध्य यह युद्ध यूरोप में होने वाली लड़ाई, जो कि आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के कारण लड़ी जा रही थी, का परिणाम थी। इस युद्ध का विस्तार 1744 तक भारत में भी हो गया था।

इसमें सेंट टोमे का युद्ध हुआ जो कि ब्रिटिश और फ्रांसीसी के मध्य हुआ। मॉरीशस से आने वाले जहाज ने फ्रांसीसियों की सहायता की जिससे उन्होंने मद्रास पर कब्जा कर लिया और ब्रिटिश भी इस क्षेत्र के लिए प्रयासरत थे। जिससे ब्रिटिश ने अनवरुद्दीन को अपनी तरफ मिलाया और संघर्ष प्रारंभ किया। इस युद्ध में फ्रांस को बढ़त मिली और यह फ्रांसीसी कम्पनी जीत गई। फ्रांस के कुछ सिपाहियों ने भारत की एक बड़ी सेना को हराकर यूरोपीय आर्मी को मजबूत सिद्ध कर दिया।

यह युद्ध यूरोप में 1748 में एक्स ला शैपेल की संधि के साथ समाप्त हो गया।

Paper Code
A 0 5 0 3 0 1 T

17

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54)

द्वितीय कर्नाटक युद्ध भारत के आपसी संघर्ष का ही परिणाम था। इसमें फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने अपनी कूटनीति का सहारा लेते हुए युद्ध लड़ा। इसमें कर्नाटक के नवाब अनवरूद्दीन के विरुद्ध चन्दा साहिब खड़ा था जो कि कर्नाटक की गद्दी को लेना चाहता था वहीं दूसरी ओर हैदराबाद में निजाम की मृत्यु के बाद नासिर जंग और मुजफ्फर जंग दो गद्दी के दावेदार थे। नासिर जंग को गद्दी मिलने के बाद मुजफ्फर जंग युद्ध के लिए तैयार था। फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने चन्दा साहिब और मुजफ्फर जंग को अपनी तरफ मिला लिया वहीं ब्रिटिश ने अनवरूद्दीन और नासिर जंग को। इनके मध्य संघर्ष हुआ और हैदराबाद में फ्रांसीसी को जीत मिली वहीं कर्नाटक में ब्रिटिश विजयी हो गये। इस युद्ध का परिणाम दोनों को अलग-2 जगह सत्ता प्राप्त हो गयी।

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1758-63)

तृतीय कर्नाटक युद्ध भी यूरोपीय मुद्दे से ही जुड़ा हुआ था। यूरोप में 1756 में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारंभ हुआ जिसमें फ्रांसीसी और ब्रिटिश सेना आमने सामने थी। साथ ही अन्य देश भी इसमें शामिल थे।

Do Not Write anything in this Portion

इधर भारत से डुप्ले को वापस बुला लिया गया और ~~के~~ नए गवर्नर गोडहू को भेजा गया साथ में सैन्य कमांडर काउंट डी लाली को काउंट डी लाली हैदराबाद से बुस्सी को वापस बुला लिया जिससे हैदराबाद में अंग्रेजो ने कब्जा कर लिया और ~~फ्रांसीसि~~ फ्रांसीसी थोड़ी सी भूमि पर सिमट कर रह गये।

इस युद्ध का अंत 1763 में पेरिस की संधि के साथ हुआ।

ब्रिटिश सफलता के कारण -

① ब्रिटिश के पास क्लाइव जैसे योग्य शासक थे।

② पहले से ये भारत में थे जिससे इनके पास संसाधन अधिक थे

③ इनको व्यापार आर्थिक लाभ भी था और कूटनीति में भी सफल थे

④ इनका साम्राज्य विस्तार अधिक था।

⑤ फ्रांसीसी एक सरकारी जबकि ब्रिटिश एक ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी थी

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 7

लार्ड कार्नवालिस - लार्ड कार्नवालिस का भारत में आगमन 1886 ई॰ में हुआ। इसे इसके सुधारों (पुलिस, सैन्य, न्याय) के लिए जाना जाता है। इसने भू राजस्व व्यवस्था में जो सुधार किया वह तत्कालीन देश, काल, परिस्थिति के अनुसार ब्रिटिश के लाभ के लिए की गई विशुद्ध पहल थी।

स्थायी बंदोबस्त :- स्थायी बंदोबस्त की शुरुआत भारत में कार्नवालिस द्वारा 1793 ई॰ में की गई। इस व्यवस्था के अंतर्गत इन ब्रिटिश अधिकारियों को स्थायी रूप से राजस्व की प्राप्ति होने लगी। जिससे किसानों का जमकर शोषण हुआ। इनके द्वारा लागू गई व्यवस्था को निम्न चित्रानुसार समझ सकते हैं।

	जमींदारों की भूमि
सामुदायिक भूमि	रैयतों की भूमि

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code: A05 03011

20

विशेषताएं :- स्थाई बंदोबस्त की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

① भूमि को केंद्रीकृत कर जमींदारों को दे दिया गया अर्थात भूस्वामी जमींदार होने लगे।

② एक स्थायी राशी निर्धारित की गई। जिसकी वसूली जमींदारों द्वारा की जाती थी।

③ 1789-90 के वर्ष में प्राप्त हुई राशी को मानक वर्ष मानकर राजस्व वसूली की गई।

④ भूमि को विक्रय योग्य बना दिया गया और भूमि केंद्रीकृत होने लगी।

⑤ प्राप्त राजस्व का 10/11 भाग ब्रिटिश को जबकि 1/11 भाग जमींदारों को प्राप्त होता था अर्थात

राजस्व का × $\frac{10}{11}$ = ब्रिटिश अधिकारियों को

राजस्व का × $\frac{1}{11}$ = जमींदारों को।

Paper Code A 0 5 0 3 0 1 7

(6) ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा एक सूर्यास्त कानून लागू किया। इस कानून का प्रावधान निम्नवत था

सूर्यास्त कानून - सूर्यास्त कानून में यह प्रावधान था कि यदि जमींदार एक निश्चित राशि, एक निश्चित तिथि को ब्रिटिश अधिकारियों को देना होता था यदि वे न देते तो उनकी जमींदारी नीलाम हो जाती।

स्थायी बंदोबस्त के परिणाम -

स्थायी बंदोबस्त के परिणाम निम्नलिखित हैं -

(1) चूंकि भूमि को जमींदारों के हाथों में दे दिया गया तो वे कभी-कभी रैयतों से अनुबंधित मजदूरी को भी करवाने लगे।

(2) भूमि को विक्रय योग्य बना दिया गया था। जिससे भूमि आसानी से बेची जा सकती थी। अतः किसान राजस्व पूर्ति के लिए भूमि को बेच देते थे।

(3) स्थायी बंदोबस्त ने भूकाल को बढ़ावा दिया। जिससे किसानों की स्थिति बद से बदतर होती चली गई।

(4) स्थायी बंदोबस्त को लागू करने में कार्नवालिस की यह अवधारणा रही थी कि जमींदार कृषि को प्रगतिशील बनाएंगे जिससे कृषि को बढ़ावा मिलेगा और कच्चे माल की प्राप्ति होगी परंतु

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A 0 5 0 3 0 1 7

वास्तव में ऐसा नहीं था । यह केवल जमींदारों द्वारा दिखावा था बल्कि वे तो उपसामंतीकरण करके अधिक राजस्व वसूल रहे थे।

⑤ स्थायी बंदोबस्त में कार्नवालिस की विचारधारा थी कि वह प्रशासनिक झंझटों से मुक्त हो सकेगा और कुछ जमींदारों से राजस्व वसूल सकेगा ~~तथा~~ जबकि हुआ इसका विपरीत जमींदारों ने और प्रशासनिक झंझट खड़ा कर दिया।

उत्तरदायी कारक –

① विचारधारा –

स्थायी बंदोबस्त ने विचारधारा के बल पर कार्य किया

① पितसत्ता
② स्कॉटिश प्रबोधन
③ प्रकृतितंत्रवादी

② भौतिक आर्थिक कारक

① स्थायी रूप से राजस्व लाभ
② सेना को उचित वेतन
③ जमींदार प्रगतिशील
④ गाँवों में मुद्रा का आगमन जबकि विपरीत हुआ। शहरी महाजन गाँव न आकर मुद्रा शहरों की ओर गया।

Paper Code

A	0	S	D	3	0	1	T

(5) राजनीतिक सोच में था कि लोग सहयोग देंगें जबकि 1857 के विद्रोह ने दिखा दिया कि यह इसका विपरीत ढंग था। कि लोग सहयोग देंगें जबकि लोगों ने विद्रोह किया

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

A 0 5 0 3 0 1 7